अनुक्रमणिका

अध्याय 1. मौद्रिक नीति एवं मुद्रास्फीति

- मौद्रिक नीति के उपकरण....1.1
  - आरक्षित अनुपात (CRR, SLR)....1.1
  - विभिन्न दरें (MSF, रेपो, रिवर्स रेपो, SDF)....1.3
  - खुला बाज़ार परिचालन (OMOs)....1.5
  - मौद्रिक नीति समिति....1.7
  - गुणात्मक उपकरण....1.9
- मुद्रास्फीति....1.10
  - उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI)....1.12
  - थोक मूल्य सूचकांक (WPI)....1.13
  - औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)....1.14
  - मुद्रास्फीति के कारण....1.15
  - मुद्रास्फीति के प्रभाव....1.16
  - मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के उपाय....1.18
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न (PYQs)....1.18

अध्याय 2. बैंकिंग एवं शेयर बाज़ार

- वित्तीय मध्यस्थ....2.1
  - प्रमुख वित्तीय घटनाओं की टाइमलाइन....2.2
  - भारतीय रिज़र्व बैंक (बैंकों का बैंक)....2.3
  - अनुसूचित बैंक....2.6
  - विभेदक बैंक (RRB, LAB, SFB, PB)....2.7
  - सहकारी बैंक....2.8
  - बैंक बोर्ड ब्यूरो....2.9
  - बेसल III मानदंड....2.9
  - प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र ऋण....2.10
  - अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान (SIDBI, NABARD, NaBFID, EXIM, NHB)....2.12
  - गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (NBFCs)....2.14
  - गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां (NPA)....2.15
  - सरफेसी अधिनियम (SARFAESI Act)....2.18
  - दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता 2016 (IBC 2016)....2.18
  - परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियां (ARCs)....2.21
  - भारत में बैंकिंग क्षेत्र के प्रमुख सुधार....2.22
  - भारत में विभिन्न बैंकिंग समितियां....2.23

- भुगतान प्रणाली....2.24
    - भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI)....2.24
    - UPI एवं ई-रुपया....2.25
- मुद्रा आपूर्ति....2.27
- वित्तीय बाज़ार....2.28
    - मुद्रा बाज़ार....2.29
    - पूंजी बाज़ार....2.29
    - बंधपत्रों (बॉन्ड) के प्रकार....2.30
    - पार्टिसिपेटरी नोट्स एवं ADR....2.31
    - बॉन्ड प्रतिफल....2.32
    - शेयर के विभिन्न प्रकार....2.32
    - प्राथमिक बाज़ार....2.34
    - द्वितीयक बाज़ार....2.35
        - स्टॉक एक्सचेंज (BSE, NSE)....2.35
    - सेबी....2.38
    - म्यूचुअल फंड एवं निवेश कोष (हेज फण्ड, RIETs, InVITs, ETF)....2.39
    - प्रतिभूति बाज़ार संहिता 2025....2.41
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....2.41

अध्याय 3. राजकोषीय नीति एवं सार्वजनिक वित्त

- बजट का ऐतिहासिक घटनाक्रम 3.1
    - लेखानुदान एवं अंतरिम बजट....3.4
    - शून्य-आधारित बजट एवं जेंडर बजट....3.5
    - आउटकम बजट 3.6
- बजट अवलोकन....3.6
    - सरकारी घाटे (राजकोषीय घाटा, प्राथमिक घाटा, राजस्व घाटा)....3.7
    - उच्च राजकोषीय घाटे के कारण एवं राजकोषीय प्रोत्साहन....3.9
    - उच्च राजकोषीय घाटे से उत्पन्न समस्याएं एवं राजकोषीय समेकन....3.10
    - भारत में राजकोषीय सुधार....3.11
    - लाफ़र वक्र....3.12
    - घाटे का वित्तपोषण और सरकार की कुल देयताएं....3.12
- एफआरबीएम (FRBM) अधिनियम....3.13
    - एन. के. सिंह समिति....3.14
- केंद्र-राज्य वित्तीय संबंध....3.15
- वित्त आयोग....3.17
    - 16वाँ वित्त आयोग....3.18
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....3.21

अध्याय 4. बजट 2026-27
- 3 कर्तव्य....4.1
- बजट 2026-27 में विभिन्न क्षेत्र....4.4
- बजट 2026-27 में कर सुधार....4.8
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....4.8

अध्याय 5. कराधान एवं वस्तु और सेवा कर (जीएसटी)
- कर का प्रभाव एवं करापात....5.1
- करों के प्रकार, अधिभार एवं उपकर....5.2
  - प्रत्यक्ष कर....5.3
  - अप्रत्यक्ष कर....5.4
- एडम स्मिथ के कराधान के 4 सिद्धांत....5.5
- वस्तु एवं सेवा कर....5.6
  - जीएसटी परिषद....5.7
  - जीएसटी में समाहित कर....5.7
  - जीएसटी 2.0 सुधार....5.8
- भारत में कर सुधार....5.11
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....5.12

अध्याय 6. सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) एवं राष्ट्रीय आय
- जीडीपी मापन के 3 दृष्टिकोण (आय, व्यय एवं उत्पादन विधि)....6.1
- मौद्रिक (नाममात्र) एवं वास्तविक जीडीपी....6.2
- जीडीपी आधार वर्ष परिवर्तन का प्रभाव....6.2
- राष्ट्रीय आय....6.3
- आर्थिक संवृद्धि बनाम आर्थिक विकास....6.4
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....6.5

अध्याय 7. योजना, आर्थिक सुधार एवं उदारीकरण
- पंचवर्षीय योजना....7.1
- नीति आयोग....7.7
  - आकांक्षी जिला कार्यक्रम....7.8
- LPG सुधार....7.10
  - एलपीजी सुधारों के लिए प्रेरक कारक....7.10
  - उदारीकरण एवं निजीकरण....7.11
  - वैश्वीकरण....7.12
  - एलपीजी सुधारों के लाभ....7.13
  - एलपीजी सुधारों की आलोचना....7.14
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....7.15

अध्याय 8. भुगतान संतुलन, व्यापार, विदेशी सहायता एवं निवेश

- भुगतान संतुलन........8.1
  - चालू खाता........8.2
  - पूंजीगत खाता........8.4
    - FDI बनाम FPI........8.5
    - FDI को बढ़ावा देने के प्रयास........8.6
  - फॉरेन एक्सचेंज (Forex)........8.7
- विनिमय दर........8.8
  - NEER एवं REER........8.9
- भारत का व्यापार........8.10
  - निर्यात को बढ़ावा देने हेतु उठाए गए कदम एवं निर्यात तैयारी सूचकांक........8.11
  - SEZ और गिफ्ट सिटी........8.12
- ब्रेटन वुड्स संस्थान........8.14
  - अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) एवं विश्व व्यापार संगठन (WTO)........8.15
  - विश्व आर्थिक मंच (WEF)........8.17
- व्यापार बाधाएं एवं कृषि पर समझौता (AoA)........8.18
- मुक्त व्यापार समझौता (FTA)........8.19
- भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता........8.20
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न........8.22

अध्याय 9. कृषि, संबद्ध क्षेत्र एवं खाद्य प्रसंस्करण

- महत्त्वपूर्ण आँकड़े एवं प्रमुख तथ्य........9.1
- विभिन्न संस्थान........9.2
- कृषि उत्पादन........9.3
- भारतीय कृषि चुनौतियां और सरकारी पहलें........9.4
- न्यूनतम समर्थन मूल्य........9.6
- कृषि योजनाएं एवं पहलें........9.8
- भारत में भूमि सुधार........9.13
- कृषि विपणन........9.14
- खाद्य प्रसंस्करण........9.15
- कृषि-संबंधित सब्सिडी 9.17
- खाद्य प्रबंधन (भारतीय खाद्य निगम, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013)........9.18
- कृषि संबद्ध क्षेत्र........9.20
- कृषोन्नति योजना........9.24
- मोटे अनाज (मिलेट्स)........9.25
- कृषि वानिकी और विभिन्न कृषि क्रांतियां........9.26
- क्या कृषि आय पर कर लगाया जाना चाहिए?........9.27
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न........9.28

अध्याय 10. उद्योग एवं MSMEs

- भारत का औद्योगिक क्षेत्र......10.2
- प्रमुख उद्योग......10.3
- राष्ट्रीय विनिर्माण मिशन......10.6
- लॉजिस्टिक प्रदर्शन सूचकांक......10.6
- सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम......10.7
- स्टार्टअप......10.9
- स्टैंड-अप इंडिया......10.11
- वैश्विक नवाचार सूचकांक......10.11
- उद्योग, नवाचार एवं उत्पादन को बढ़ावा देने के प्रयास......10.11
- उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना......10.13
- उद्योग 4.0......10.14
- औद्योगिक नीतियां......10.17
    - औद्योगिक नीति, 1991......10.18
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न......10.19

अध्याय 11. अवसंरचना एवं निवेश

- नागरिक उड्डयन......11.1
- सड़क मार्ग एवं राजमार्ग......11.2
- रेलवे......11.3
- पत्तन, जलमार्ग एवं पोत परिवहन......11.5
    - प्रमुख पत्तन......11.7
- ऊर्जा क्षेत्र......11.8
- डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना......11.10
- भारत में अवसंरचना से संबंधित समस्याएं......11.11
- भारत में अवसंरचना को बढ़ावा देने के प्रयास......11.12
- विभिन्न सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल......11.13
- राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन......11.14
- राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन 11.15
- पीएम गति शक्ति एवं राष्ट्रीय लॉजिस्टिक नीति......11.16
- शहरीकरण......11.17
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न......11.20

अध्याय 12. सेवा क्षेत्र एवं ई-कॉमर्स

- विभिन्न सेवा क्षेत्र (पर्यटन, परिवहन, रियल एस्टेट, सूचना प्रौद्योगिकी एवं अंतरिक्ष)......12.1
- ई-कॉमर्स......12.5
    - ओएनडीसी (ONDC)......12.6
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता......12.7

अध्याय 13. ग़रीबी एवं बेरोजगारी

- ग़रीबी....13.1
- ग़रीबी मापन की विभिन्न पद्धतियाँ....13.2
- बहुआयामी ग़रीबी सूचकांक....13.3
- विभिन्न ग़रीबी के सूचकांक....13.4
- ग़रीबी के कारण....13.5
- ग़रीबी के परिणाम....13.6
  - असमानता (लॉरेंज वक्र)....13.6
- ग़रीबी उन्मूलन के प्रयास....13.7
- भुखमरी....13.8
  - वैश्विक भुखमरी सूचकांक....13.9
- बेरोजगारी....13.11
  - बेरोजगारी के विभिन्न प्रकार....13.13
  - बेरोजगारी का मापन 13.14
  - बेरोजगारी के कारण....13.16
- गिग अर्थव्यवस्था एवं असंगठित कार्यबल....13.17
- श्रमिक वर्ग का कौशल विकास....13.18
  - स्किल इंडिया मिशन....13.22
- महिला श्रम बल भागीदारी दर बढ़ाने के प्रयास....13.23
- स्वयं सहायता समूह....13.24
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था....13.25
- वीबी-जी राम जी योजना 13.26
- जल जीवन मिशन....13.28
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....13.30

अध्याय 14. शिक्षा एवं स्वास्थ्य

- शिक्षा....14.1
  - शिक्षा प्रणाली में समस्याएं....14.2
  - नई शिक्षा नीति....14.3
  - स्कूली शिक्षा....14.4
  - उच्च शिक्षा....14.7
- स्वास्थ्य....14.8
  - स्वास्थ्य क्षेत्र में चुनौतियां....14.10
  - राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति....14.10
  - स्वास्थ्य क्षेत्र में विभिन्न पहलें....14.11
  - डिजिटल लत एवं मानसिक स्वास्थ्य....14.16
  - NFHS-6 के स्वास्थ्य आंकड़े....14.17
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....14.18

अध्याय 15. कमज़ोर वर्गों के लिए योजनाएँ

- महिला....15.1
- बाल....15.5
- अल्पसंख्यक वर्ग....15.7
- अनुसूचित जनजातियाँ....15.9
- अनुसूचित जातियाँ....15.11
- दिव्यांगजन....15.14
- वरिष्ठ नागरिक....15.16
- एलजीबीटीक्यू + (LGBTQ+)....15.18
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....15.18

अध्याय 16. मानव विकास सूचकांक, हैप्पीनेस इंडेक्स एवं अन्य सूचकांक

- मानव विकास सूचकांक....16.1
- लैंगिक असमानता सूचकांक....16.2
- हैप्पीनेस इंडेक्स....16.3
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....16.4

अध्याय 17. पर्यावरण क्षरण एवं सतत विकास

- अनुकूलन (Adaptation)....17.1
- शमन (Mitigation)....17.3
  - गैर-जीवाश्म ईंधन को बढ़ावा देने के उपाय....17.4
  - सौर ऊर्जा....17.4
  - परमाणु ऊर्जा....17.5
    - शांति अधिनियम (SHANTI Act) 2025....17.5
- मिशन लाइफ....17.6
- राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान एवं पंचामृत....17.7
- पीएम कुसुम....17.8
- जलवायु वित्त....17.10
- जलवायु नियंत्रण....17.10
- कार्बन सीमा समायोजन तंत्र (CBAM)....17.11
- पर्यावरणीय कुज़नेट्स वक्र....17.12
- सतत विकास लक्ष्य (SDGs)....17.13
- मुख्य एवं प्रारंभिक परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न....17.17

अध्याय 18. परिशिष्ट

- **E.** अर्थशास्त्र से संबंधित व्यापक निबंध विषय
- **M.** विविध

0 भारतीय अर्थव्यवस्था का परिचय

भारांश

परीक्षा	चरण	अनुमानित अंक
UPSC	प्रारंभिक परीक्षा	25-30 अंक (औसतन 13-15 प्रश्न)
	मुख्य परीक्षा	लगभग 200 अंक
RAS	प्रारंभिक परीक्षा	10-12 अंक (औसतन 7-8 प्रश्न)
	मुख्य परीक्षा	लगभग 40-45 अंक
SI एवं अन्य परीक्षाएँ	प्रारंभिक परीक्षा	15-20 अंक (औसतन 8-10 प्रश्न)

पाठ्यक्रम

हमने अर्थशास्त्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को तीन मुख्य भागों में वर्गीकृत किया है, जो इस प्रकार हैं -

1. वित्तीय अर्थशास्त्र (Financial Economics)
2. क्षेत्रक अर्थशास्त्र (Sectoral Economics) [अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्र]
3. कल्याणकारी अर्थशास्त्र (Welfare Economics)

वित्तीय अर्थशास्त्र (Financial Economics)

1. मौद्रिक नीति एवं मुद्रास्फीति (Monetary Policy and Inflation)
2. वित्तीय अर्थशास्त्र: बैंकिंग एवं शेयर बाज़ार (Financial Economics: Banking and Share Market)
3. राजकोषीय नीति एवं लोक वित्त (Fiscal Policy & Public Finance)
4. बजट 2026-27
5. कराधान तथा वस्तु एवं सेवा कर (Taxation and Goods and Services Tax - GST)
6. सकल घरेलू उत्पाद एवं राष्ट्रीय आय (GDP and National Income)

क्षेत्रक अर्थशास्त्र (Sectoral Economics)

7. नियोजन, आर्थिक सुधार एवं उदारीकरण (Planning, Economic Reforms and Liberalization)
8. भुगतान संतुलन, व्यापार, विदेशी सहायता एवं निवेश (Balance of Payment, Trade, Foreign Aid and Investment)
9. कृषि, संबद्ध क्षेत्र एवं खाद्य प्रसंस्करण (Agriculture, Allied Sector and Food Processing)
10. उद्योग एवं सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) (Industry and MSME)
11. अवसंरचना एवं निवेश (Infrastructure and Investment)
12. सेवा क्षेत्र एवं ई-कॉमर्स (Service Sector and e-Commerce)

कल्याणकारी एवं पर्यावरणीय अर्थशास्त्र

13. निर्धनता एवं बेरोजगारी (Poverty and Unemployment)
14. शिक्षा एवं स्वास्थ्य (Education and Health)
15. दुर्बल वर्गों के लिए प्रावधान (Provisions for Weaker Sections)
16. मानव विकास सूचकांक, खुशहाली सूचकांक एवं अन्य सूचकांक (Human Development Index, Happiness Index and Other Indices)
17. पर्यावरणीय क्षरण एवं सतत विकास (Environmental Degradation and Sustainable Development)

1 मौद्रिक नीति & मुद्रास्फीति

लेक्चर देखने के लिए स्कैन करें

मौद्रिक नीति | मुद्रास्फीति

- किसी देश में मुद्रा की आपूर्ति और ब्याज दरों के नियमन व प्रबंधन हेतु केंद्रीय बैंक (RBI) द्वारा अपनाई जाने वाली नीति को मौद्रिक नीति कहा जाता है।
- इस नीति का मुख्य उद्देश्य मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखना है, जबकि आर्थिक संवृद्धि इसका द्वितीयक उद्देश्य है।

मौद्रिक नीति के उपकरण

अप्रत्यक्ष → **मात्रात्मक उपकरण**

- **आरक्षित अनुपात**
  - CRR
  - SLR
- **दरें**
  - रेपो दर
  - रिवर्स रेपो दर
  - MSF/SDF
- **खुला बाजार संचालन (OMO)**

प्रत्यक्ष → **गुणात्मक उपकरण**

- **प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र ऋण**
- **नैतिक दबाव/अनुनय**
- **ऋण-मूल्य अनुपात (LTV)**
- **चयनात्मक साख नियंत्रण**
- **प्रत्यक्ष कार्यवाही**

- मात्रात्मक उपकरण (Quantitative Tools): ये अर्थव्यवस्था में समग्र मुद्रा (तरलता) को नियंत्रित करते हैं।
- गुणात्मक उपकरण (Qualitative Tools): ये अर्थव्यवस्था के किसी विशेष क्षेत्र को लक्षित करते हैं।

आरक्षित अनुपात

- **CRR (नक़द आरक्षित अनुपात) -** यह किसी बैंक की कुल जमा राशि का वह न्यूनतम प्रतिशत है जिसे वाणिज्यिक बैंकों को RBI के पास नक़द (Cash) भंडार के रूप में रखना अनिवार्य होता है।
- **SLR (सांविधिक तरलता अनुपात) -** यह किसी बैंक की निवल मांग और सावधि देयताओं (जमा - NDTL) का वह न्यूनतम प्रतिशत है जिसे बैंकों को तरल संपत्तियों जैसे नक़द, स्वर्ण या अनुमोदित सरकारी प्रतिभूतियों के रूप में बनाए रखना अनिवार्य होता है।

नोट - CRR और SLR को सामूहिक रूप से "**परिवर्तनीय (Variable) आरक्षित अनुपात**" या "**सांविधिक आरक्षित अनुपात (Statutory Reserve Ratios)**" के रूप में जाना जाता है।

2 बैंकिंग & शेयर बाज़ार

लेक्चर देखने के लिए स्कैन करें

Banking

Share market

वित्तीय मध्यस्थ (Financial Intermediaries)

- वित्तीय मध्यस्थ किसी वित्तीय लेनदेन के दौरान दो पक्षों (बचतकर्ताओं एवं ऋणग्राहकों) के बीच एक संपर्क सूत्र या मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं।
- ये संस्थाएँ बचतकर्ताओं से जमा, निवेश अथवा प्रीमियम के रूप में धन एकत्रित करती हैं और तत्पश्चात इस धन को ऋण अथवा निवेश के रूप में विभिन्न व्यक्तियों, व्यवसायों एवं संस्थाओं को उपलब्ध कराती हैं। इस प्रकार ये अर्थव्यवस्था में निधियों के कुशल प्रवाह को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

- बैंक
  - वाणिज्यिक
  - सहकारी
- गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान
  - AIFIs (अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान)
    - एक्ज़िम (EXIM)
    - नाबार्ड (NABARD)
    - NHB
    - सिडबी (SIDBI)
    - NABFID
  - स्टॉक एक्सचेंज
    - NSE
    - BSE
    - CSE
  - NBFCs (गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ)
    - म्यूचुअल फंड
    - प्राथमिक डीलर
    - पेंशन फंड
    - बीमा कंपनियाँ

3 राजकोषीय नीति & सार्वजनिक वित्त

लेक्चर देखने के लिए स्कैन करें

- राजकोषीय नीति से आशय सरकार द्वारा सरकारी व्यय तथा कराधान का उपयोग करके अर्थव्यवस्था के विभिन्न आर्थिक परिणामों (जैसे - GDP संवृद्धि, सामाजिक-आर्थिक लक्ष्यों, आय का समान और न्यायसंगत वितरण, रोजगार सृजन, मुद्रास्फीति पर नियंत्रण आदि) को प्रभावित करने से है।
- मौद्रिक नीति के अंतर्गत **केंद्रीय बैंक** (जैसे- RBI) द्वारा अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति और ब्याज दरों का प्रबंधन किया जाता है, जबकि राजकोषीय नीति में **सरकार** द्वारा कराधान और सरकारी व्यय का उपयोग किया जाता है। **राजकोषीय नीति के उपकरण निम्नानुसार है -**

बजट	कराधान	सरकारी निवेश एवं विनिवेश	घाटे का वित्तपोषण	सब्सिडी	वित्त आयोग

हम आने वाले अध्यायों में इन सभी टूल्स के बारे में विस्तार से जानेंगे।

बजट का ऐतिहासिक घटनाक्रम

7 अप्रैल 1860: जेम्स विल्सन द्वारा भारत का प्रथम बजट प्रस्तुत किया गया।

1924: एकवर्थ समिति की अनुशंसा पर रेल बजट को आम बजट से पृथक किया गया था।

26 नवंबर 1947: आर. के. षण्मुखम चेट्टी (शेट्टी) द्वारा स्वतंत्र भारत का प्रथम बजट प्रस्तुत किया गया।

2005-06: जेंडर बजटिंग, आउटकम बजट, शून्य-आधारित बजट

2017:
- योजनागत और गैर-योजनागत व्यय का वर्गीकरण समाप्त
- आउटपुट आउटले आउटकम फ्रेमवर्क
- रेल बजट का आम बजट में पुनः विलय

2019: पारंपरिक बजट 'ब्रीफकेस' को भारतीय **'बही-खाता'** द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।

2021: प्रथम पूर्णतः **पेपरलेस बजट** प्रस्तुत किया गया

नोट - भारतीय संविधान में 'बजट' शब्द का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है। इसके स्थान पर संविधान (अनुच्छेद 112) में 'वार्षिक वित्तीय विवरण' (AFS) शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

4 बजट 2026-27

- **थीम** - युवा शक्ति संचालित बजट
- दुविधा के बजाय कार्य, बयानबाजी के बजाय सुधार तथा लोकलुभावन के बजाय जनकल्याण को प्राथमिकता।
- 'बजट' (Budget) शब्द की व्युत्पत्ति फ्रांसीसी (ओल्ड फ्रेंच) भाषा के मूल शब्द 'बुगेट' (Bougette) से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - 'चमड़े का थैला'। वर्ष 2019 में, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने चमड़े के ब्रीफकेस के बजाय एक **लाल बही-खाता** लेकर अपना पहला केंद्रीय बजट पेश किया था।

Scan to watch lecture

तीन कर्त्तव्य

- **आर्थिक संवृद्धि** — उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि करना
- **लोगों की भागीदारी** — लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करना, उनकी क्षमता का निर्माण करना और उन्हें भारत की समृद्धि में भागीदार बनाना।
- **सबका साथ सबका विकास** — प्रत्येक परिवार, समुदाय, वर्ग और क्षेत्र (सेक्टर) की संसाधनों, सुख-सुविधाओं तथा अवसरों तक पहुँच हो।

आय पक्ष

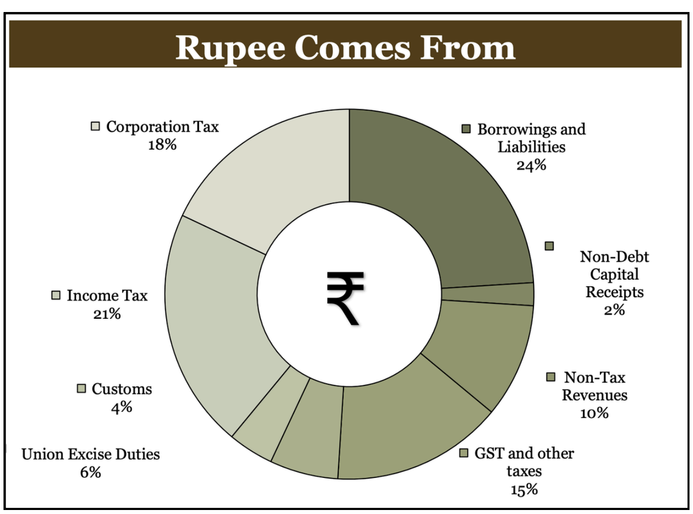

5 कराधान और GST

लेक्चर देखने के लिए स्कैन करें

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 265 के अनुसार, कानून के प्राधिकार के बिना न तो कोई कर (tax) लगाया जा सकता है और न ही एकत्रित किया जा सकता है। इसलिए, कर लगाने के लिए संसद द्वारा आयकर अधिनियम, जीएसटी अधिनियम जैसे विभिन्न कानून पारित किए जाते हैं।
- कराघात और करापात के आधार पर, कर आमतौर पर 2 श्रेणियों में वर्गीकृत किए जाते हैं - प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर।

आइए सबसे पहले करापात और कराघात, कर के भार का स्थानांतरण और कराघात में लोच की भूमिका को समझते हैं -

करापात (Impact of Tax) -

- करापात से तात्पर्य किसी कर के शुरुआती या प्रारंभिक भार/बोझ से है।
  - उदाहरण: जीएसटी (GST) विक्रेता से वसूला जाता है। इसलिए, जीएसटी का प्रारंभिक करापात विक्रेता पर होता है।

कराघात (Incidence of Tax) -

- कराघात से तात्पर्य किसी कर के अंतिम या अंतिम रूप से पड़ने वाले भार से है।
  - उदाहरण: जब जीएसटी बढ़ाया जाता है, तो विक्रेता उत्पाद की कीमत बढ़ा देता है, इसलिए अंतिम कर भार उपभोक्ता द्वारा वहन किया जाता है।

कर के भार का स्थानांतरण (Shifting of Tax Burden) -

- कर के स्थानांतरण से तात्पर्य कर के भार को उस व्यक्ति से, जिस पर कर शुरू में लगाया गया है, किसी अन्य व्यक्ति पर स्थानांतरित करने से है।
- **अग्रगामी स्थानांतरण (Forward shifting) -** इसके तहत कीमत में वृद्धि करके कर के भार को उत्पादक/विक्रेता से उपभोक्ता पर स्थानांतरित कर दिया जाता है।
- **पश्चगामी स्थानांतरण (Backward shifting) -** इसके तहत कर का भार उत्पादक द्वारा स्वयं वहन किया जाता है या कम लाभ, मजदूरी या लागत कीमतों के माध्यम से इसे उत्पादन के साधनों की ओर स्थानांतरित कर दिया जाता है।

कराघात में लोच की भूमिका (Role of Elasticity in Tax Incidence) -

- उपभोक्ताओं और उत्पादकों के बीच कर के भार का वितरण, मांग और आपूर्ति की सापेक्ष मूल्य लोच (relative price elasticity) पर निर्भर करता है।
- **उदाहरण:** यदि मांग, आपूर्ति की तुलना में अधिक लोचहीन है → अर्थात् भले ही आपूर्ति कम हो, मांग समान रहती है → इसका मतलब है कि उपभोक्ता कीमत बढ़ने के बावजूद इस वस्तु को खरीदेंगे → ऐसे में कर का भार उपभोक्ता पक्ष पर स्थानांतरित कर दिया जाएगा [अग्रगामी स्थानांतरण]।
- **उदाहरण:** यदि आपूर्ति, मांग की तुलना में अधिक लोचहीन है → अर्थात् उत्पादक को अधिक भार वहन करने की आवश्यकता होगी → [पश्चगामी स्थानांतरण]।

6 GDP और राष्ट्रीय आय

लेक्चर देखने के लिए स्कैन करें

- सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एक निश्चित समयावधि, आमतौर पर एक वर्ष के दौरान किसी देश के घरेलू क्षेत्र के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा GDP के मापन के लिए उपयोग किए जाने वाले 3 दृष्टिकोण -

आय विधि	व्यय विधि	उत्पादन विधि

आय विधि (WIPR)

- **GDP** = श्रमिकों की मजदूरी (W) + ऋणदाताओं को पूंजी पर देय ब्याज (I) + उद्यमियों/फर्म के स्वामियों का लाभ (P) + भूमि का किराया (R)
- इसे साधन लागत/कारक लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP @ Factor Cost) कहा जाता है।
- बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP @ Market Price) = साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद + (कर - सब्सिडी)

व्यय विधि (CIGXM)

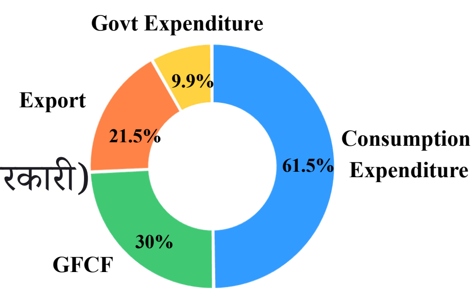

- **GDP = C + I + G + X – M**
- **GDP** = निजी अंतिम उपभोग व्यय (C) + निवेश व्यय (I- निजी व सरकारी) + सरकारी उपभोग व्यय (G) + (निर्यात X - आयात M)
- भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में सबसे बड़ा योगदान **निजी अंतिम उपभोग व्यय [61.5%]** का है, इसके बाद निवेश व्यय (सकल स्थिर पूंजी निर्माण - GFCF) [30%], फिर कुल निर्यात [21.5%] और अंत में सरकारी उपभोग व्यय [9.9%] का स्थान आता है।
- **उत्पादन विधि (सकल मूल्य वर्धन - GVA)**
  - **GVA** = अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का कुल मूल्य - मध्यवर्ती वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य
  - GDP = GVA + कर - सब्सिडी

$$GVA_{FC} \xrightarrow{+\text{ शुद्ध उत्पादन कर}} GVA_{BP} \xrightarrow{+\text{ शुद्ध उत्पाद कर}} GVA_{MP}\ (= GDP_{MP})$$

FC = Factor cost (कारक लागत), BP = Basic Price (आधार मूल्य), MP = Market Price (बाजार मूल्य)

- **नोट** - जब वास्तविक GDP का संतुलन स्तर संभावित GDP से कम होता है, तो उस स्थिति को अपस्फीतिकारी अंतराल या मंदी का अंतराल कहा जाता है। यदि वास्तविक GDP संभावित GDP से अधिक हो, तो इसे स्फीतिकारी/मुद्रास्फीति अंतराल कहा जाता है।

7 योजना, आर्थिक सुधार और उदारीकरण

- स्वतंत्रता के समय, भारत एक गरीब, गतिहीन और मुख्य रूप से कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था थी, जो व्यापक गरीबी, निरक्षरता, बीमारी, निम्न जीवन प्रत्याशा और निम्न कृषि उत्पादकता से ग्रस्त था।
- इसलिए, विकास को गति देने, आत्मनिर्भरता हासिल करने, क्षेत्रीय और सामाजिक असमानताओं को कम करने और लोगों के जीवन स्तर में सुधार करने के लिए आर्थिक नियोजन आवश्यक था।

पूरी सीरीज़ देखने के लिए स्कैन करें

भारत में नियोजन का इतिहास

1934	1938	1944	1944	1945	1950
एम. विश्वेश्वरैया की पुस्तक "द प्लांड इकॉनमी ऑफ़ इंडिया"	योजना समिति (जवाहरलाल नेहरू)	निवेश के लिए बॉम्बे प्लान	श्रीमन नारायण अग्रवाल द्वारा गांधीवादी योजना	एम.एन. रॉय का जन योजना अभियान	जयप्रकाश नारायण की सर्वोदय योजना

पंचवर्षीय योजनाएँ

- सोवियत संघ की केंद्रीकृत नियोजन प्रणाली से प्रेरित होकर, भारत ने 1951 में पंचवर्षीय योजनाओं का मॉडल अपनाया। इस प्रक्रिया की शुरुआत मार्च 1950 में योजना आयोग की स्थापना के साथ हुई।

भाखड़ा नागल बांध

गांधी सागर बांध

तुंगभद्रा बांध

8 भुगतान संतुलन, व्यापार, विदेशी सहायता और निवेश

सीरीज़ देखने के लिए स्कैन करें

अर्थव्यवस्थाओं को मोटे तौर पर **खुली और बंद अर्थव्यवस्थाओं** के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। एक बंद अर्थव्यवस्था के विपरीत, खुली अर्थव्यवस्था **वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी के आदान-प्रदान** के माध्यम से शेष विश्व के साथ जुड़ती है। इन अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक लेन-देन को **भुगतान संतुलन (BoP)** में व्यवस्थित रूप से दर्ज किया जाता है।

भुगतान संतुलन (BoP)

- भुगतान संतुलन (BoP) एक निर्दिष्ट समय अवधि, आमतौर पर एक वर्ष के लिए, किसी देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच वस्तुओं, सेवाओं और परिसंपत्तियों में लेन-देन को दर्ज करता है।
- भुगतान संतुलन (BoP) में दो मुख्य खाते होते हैं - चालू खाता और पूंजीगत खाता।

भुगतान संतुलन

चालू खाता
- **व्यापार** - वस्तुएं (-)

अदृश्य मदें -
- **निवल आय** - लाभ, ब्याज, लाभांश, मजदूरी (-)
- **निवल अंतरण** - रेमिटेंस/ प्रेषण, दान, उपहार, अनुदान (+)

त्रुटियां एवं लोप: भूल-चूक और अशुद्धियाँ

आधिकारिक आरक्षित लेन-देन
- RBI विदेशी मुद्रा भंडार, विशेष आहरण अधिकार (SDR) (+)

पूंजीगत खाता
- विदेशी निवेश: FDI, FPI (+)
- संप्रभु उधारी (+)
- बाह्य वाणिज्यिक उधारी (+)
- NRI खाता जमा (+)

नोट - निजी क्षेत्र का बाह्य (विदेशी) ऋण > सरकार का संप्रभु ऋण

9 कृषि, संबद्ध क्षेत्र और खाद्य प्रसंस्करण

- कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों में फसलें, बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन, पुष्प कृषि (फ्लोरीकल्चर) आदि शामिल हैं।

महत्वपूर्ण आंकड़े और मुख्य तथ्य

कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों का राष्ट्रीय आय में योगदान	लगभग 20% [1/5th]
कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों का देश के कार्यबल में योगदान	लगभग 46.1%
कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र में औसत वार्षिक वृद्धि दर [पिछले 5 वर्ष]	4.40%
भारत का खाद्यान्न उत्पादन [कृषि वर्ष 2024-25]	3,577.3 लाख मीट्रिक टन (LMT)
कृषि GVA में बागवानी क्षेत्र का योगदान	लगभग 33% [1/3rd]
बागवानी उत्पादन [2024-25]	362.08 मीट्रिक टन
रोजगार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का योगदान	कुल संगठित विनिर्माण रोजगार का 12.91%
भारत का कृषि निर्यात [वित्त वर्ष 25]	51.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर [कुल वस्तु निर्यात का 11.7%]
छोटे और सीमांत किसानों की संख्या [NSO सर्वेक्षण]	89.40%
भारत में शीर्ष 5 कृषि फसल उत्पाद [टन में]	गन्ना > चावल > गेहूं > तिलहन > दालें
भारत में शीर्ष कृषि फसल उत्पाद [क्षेत्रफल के अनुसार]	चावल > गेहूं > मोटा अनाज > दालें > तिलहन > कपास > गन्ना
परिचालनात्मक जोतों (operational land holdings) का औसत आकार [कृषि जनगणना 2015-16]	भारत - 1.08 हेक्टेयर राजस्थान - 2.73 हेक्टेयर
हाल ही में नाबार्ड के एक सर्वेक्षण के अनुसार, औसत भूमि जोत 0.74 हेक्टेयर है। (घट रही है)	

10 उद्योग एवं MSMEs

- उद्योग (Industry) उत्पादन के कारकों (भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यमशीलता) को संयोजित कर बाजार के लिए भौतिक वस्तुओं के निर्माण की एक व्यवस्थित प्रक्रिया है।
- उद्योग को चार उप-क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जाता है:-
    - निर्माण
    - विनिर्माण
    - खनन और उत्खनन संबंधी गतिविधियाँ
    - विद्युत, गैस, जल आपूर्ति एवं अन्य उपयोगिता सेवाएं
- **8 कोर इंडस्ट्रीज (प्रमुख उद्योग)** - सीमेंट, कोयला, कच्चा तेल, विद्युत, उर्वरक, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद और स्टील (CCC FERNS)।
    - ये 8 कोर उद्योग औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) में 40.27% योगदान देते हैं।

प्रमुख तथ्य -

- वैश्विक विनिर्माण के सकल मूल्य वर्धन (GVA) में भारत का योगदान लगभग 2.9% है।
- औद्योगिक क्षेत्र देश के कुल GVA में लगभग 28% योगदान देता है और 24% रोजगार (12 करोड़ लोगों) प्रदान करता है।
- **प्रतिस्पर्धात्मक औद्योगिक निष्पादन/प्रदर्शन सूचकांक (CIP Index)**
    - संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (UNIDO) द्वारा प्रकाशित।
    - वर्ष 2023 की रैंकिंग में भारत ने इस सूचकांक में **37वां** स्थान प्राप्त किया है।
- **व्यावसायिक प्रत्याशा सूचकांक (Business Expectations Index)**
    - भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा **त्रैमासिक** आधार पर प्रकाशित।
    - यदि सूचकांक का स्कोर 100 से अधिक है → व्यवसाय में विस्तार/वृद्धि हो रही है।
    - यदि सूचकांक का स्कोर 100 से कम है → व्यवसाय में गिरावट/कमी हो रही है।

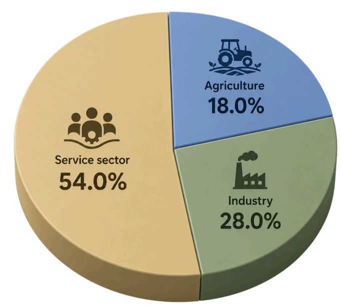

- वित्त वर्ष 2025 में औद्योगिक क्षेत्र के बैंक ऋण में वित्त वर्ष 2024 की तुलना में कमी आई है, क्योंकि कई उद्योग अब पारंपरिक बैंक ऋण के बजाय बाजार-आधारित वित्तीय उपकरणों, जैसे वाणिज्यिक प्रपत्र (कमर्शियल पेपर्स) एवं ऋणपत्रों (बॉन्ड्स), पर अधिक निर्भर हो गए हैं।

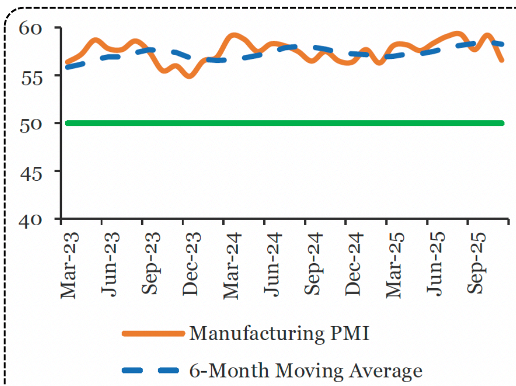

Source: HSBC Purchasing Managers Index.

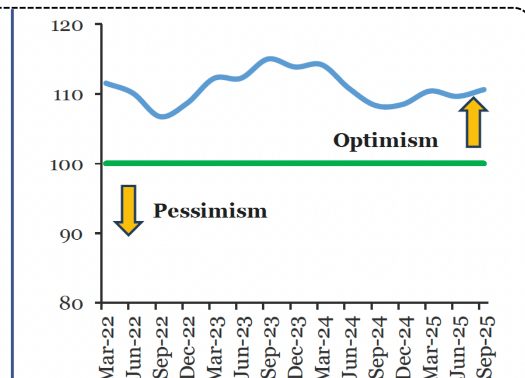

Source: Business Expectations Index (RBI Industrial Outlook Survey of the Manufacturing Sector: Q2 FY26).

11 अवसंरचना एवं निवेश

- अवसंरचना या आधारभूत ढांचा उन मूलभूत सुविधाओं का समूह है, जो किसी अर्थव्यवस्था के सुचारू संचालन और विकास में सहायता करती हैं, जैसे ऊर्जा, सिंचाई, सड़कें, रेलवे और दूरसंचार।
- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के अनुसार, अवसंरचना पर किया गया प्रत्येक ₹1 का निवेश GDP में लगभग ₹2.5 से ₹3.5 तक की वृद्धि उत्पन्न कर सकता है।

4 घटक

भौतिक	सामाजिक	डिजिटल	वित्तीय
सड़क, रेलवे , बंदरगाह, नागरिक उड्डयन, ऊर्जा	स्वास्थ्य शिक्षा आवास	डेटा सेंटर, आधार, यूपीआई (UPI), भारतनेट	जीएसटी नेटवर्क भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)

आइए, विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों - जैसे नागरिक उड्डयन, सड़क मार्ग एवं राजमार्ग, रेलवे, बंदरगाह एवं जलमार्ग, ऊर्जा इत्यादि - के संदर्भ में अवसंरचनात्मक विकास का अध्ययन करें।

नागरिक उड्डयन

- भारत विश्व के तीसरे सबसे बड़े घरेलू विमानन बाजार के रूप में उभरा है।
- देश के कुल पायलटों में 15% महिलाएं हैं।
- वर्ष 2014 में देश में 74 हवाई अड्डे थे, जिनकी संख्या बढ़कर वर्ष 2025 में 164 हो गई है।
- भारत में वर्तमान में प्रति दस लाख (1 मिलियन) आबादी पर ~0.11 हवाई अड्डे हैं। (जबकि अमेरिका में 47.35 है।)

प्रमुख पहलें -

- क्षेत्रीय संपर्क योजना - उड़े देश का आम नागरिक (RCS-UDAN) -
  - इसे वर्ष 2016 में शुरु किया गया।
  - इसका उद्देश्य देश के टियर-2 और टियर-3 शहरों के बीच क्षेत्रीय हवाई संपर्क को मजबूत करना है।
  - इसके अंतर्गत लगभग 500 किलोमीटर की दूरी के लिए फिक्स्ड-विंग विमानों द्वारा एक घंटे की उड़ान का किराया अधिकतम ₹2,500 निर्धारित किया गया है।
  - **लक्ष्य:** आगामी 10 वर्षों में 4 करोड़ यात्रियों को इस योजना के दायरे में लाना है।
- ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा नीति।
- **डिजिटल और तकनीकी पहलें:**
  - डिजी यात्रा का विस्तार (हवाई अड्डों पर प्रतीक्षा समय को कम करने के लिए), ड्रोन नियमों में उदारीकरण, ड्रोन विनिर्माण के लिए PLI योजना।
- **भारतीय वायुयान विधेयक, 2024:** यह विधेयक ब्रिटिश कालीन 'विमान अधिनियम, 1934' का स्थान लेगा। इसका मुख्य उद्देश्य सुरक्षा मानकों, नवाचार, संवृद्धि और वैश्विक अनुपालन को बढ़ाकर भारत के उड्डयन क्षेत्र का व्यापक आधुनिकीकरण करना है।

12 सेवा क्षेत्र और ई-कॉमर्स

- सेवा क्षेत्र के अंतर्गत वित्तीय, रियल एस्टेट एवं पेशेवर सेवाएँ, व्यापार, होटल, परिवहन, संचार एवं प्रसारण संबंधी सेवाएँ तथा लोक प्रशासन एवं रक्षा जैसे प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं।

प्रमुख तथ्य -

- भारत के सकल मूल्य वर्धन (GVA) में सेवा क्षेत्र का योगदान लगभग 54% है।
- भारत के कुल रोजगार में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग 30% है। [नीति आयोग]
    - वैश्विक स्तर पर लगभग 50 प्रतिशत कार्यशील आबादी सेवा क्षेत्र में कार्यरत (नियोजित) हैं।
- शहरी क्षेत्रों में लगभग 60% श्रमिक सेवा क्षेत्र में कार्यरत हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह आँकड़ा 20% से भी कम है।
- भारत विश्व में सेवाओं का **सातवाँ** सबसे बड़ा निर्यातक देश है।
    - वैश्विक वाणिज्यिक सेवा निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 4.3% है।
- जीडीपी (GDP) के अनुपात में सेवा निर्यात 9.7% है।
    - कुल सेवा निर्यात में केवल सॉफ्टवेयर सेवाओं का योगदान 40% से अधिक है।
- सेवा क्षेत्र भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) अंतर्वाह का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता है।
    - कुल FDI का 80% सेवा क्षेत्र में आता है।
    - सूचना एवं संचार सेवाएँ सबसे अधिक FDI प्राप्त करने वाला सेवा क्षेत्र हैं।
- वित्तीय वर्ष 2025-26 में सेवा क्षेत्र का PMI (परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स) लगातार 50 से ऊपर रहा, जो सेवा क्षेत्र में विस्तार का संकेत है।
    - PMI का मान 0-100 के बीच होता है। 50 से अधिक स्कोर उस क्षेत्र में आर्थिक विस्तार तथा 50 से कम स्कोर संकुचन को दर्शाता है। भारत की मासिक PMI रिपोर्ट **HSBC** (The Hongkong and Shanghai Banking Corporation) द्वारा जारी की जाती है।

विभिन्न सेवा क्षेत्र

पर्यटन क्षेत्र

- वित्तीय वर्ष 2023-24 में यात्रा और पर्यटन क्षेत्र का GDP में योगदान 5.22% रहा।
- पर्यटन क्षेत्र ने लगभग 8.46 करोड़ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगारों (कुल रोजगार का 13.3%) का समर्थन किया।
- अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन के मामले में भारत विश्व में **17वें** स्थान पर है।
    - वर्ष 2024 में पर्यटन से प्राप्त होने वाली 'विदेशी मुद्रा आय' बढ़कर 35 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई है।
- भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों में लगभग 6.5% चिकित्सा पर्यटन (Medical Tourism) के लिए आते हैं।
- विश्व आर्थिक मंच (**WEF**) के **यात्रा और पर्यटन विकास सूचकांक**, 2024 में भारत **39वें** स्थान पर रहा।
    - इस सूचकांक के 17 स्तंभों में स्कोर की सीमा 1-7 होती है।
    - भारत का उच्चतम स्कोर श्रेणी: प्राकृतिक संसाधन; न्यूनतम स्कोर श्रेणी: पर्यटक सेवाएं और बुनियादी ढांचा।

13 गरीबी और बेरोजगारी

गरीबी

- गरीबी वह स्थिति है, जिसमें व्यक्ति के पास भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त आय या संसाधन नहीं होते।
- "गरीबी हिंसा का सबसे भयानक रूप है।" - **महात्मा गांधी।**
- "गरीबी क्रांति और अपराध की जननी है।" - **अरस्तू।**
- "कहीं भी व्याप्त अत्यधिक गरीबी, हर जगह मानव सुरक्षा के लिए एक खतरा है।" - **कोफी अन्नान।**

प्रमुख तथ्य -

- जून 2025 में विश्व बैंक ने 2021 की क्रय शक्ति समता (PPP) के आधार पर अंतरराष्ट्रीय निर्धनता रेखा को US$ 2.15 प्रतिदिन से बढ़ाकर US$ 3.00 प्रतिदिन कर दिया।
- संशोधित अंतरराष्ट्रीय निर्धनता रेखा के अनुसार, वर्ष 2022-23 में भारत के लिए गरीबी दर -
  - अत्यंत/चरम गरीबी (Extreme poverty): 5.3%
  - निम्न-मध्यम आय वर्ग गरीबी: 23.9%
- विश्व बैंक का लक्ष्य: वर्ष 2030 तक वैश्विक अत्यंत गरीबी को समाप्त करना।
- नीति आयोग के बहुआयामी निर्धनता सूचकांक (MPI) के अनुसार, वर्ष 2022-23 में भारत में गरीबी दर 11.28% है।
- तेंदुलकर समिति की गरीबी रेखा के अनुसार, भारत में गरीबी दर:
  - वर्ष 2011-12 → 21.9%
  - वर्ष 2023-24 → 2.3%
- विश्व निर्धनता घड़ी (वर्ल्ड पावर्टी क्लॉक) के अनुसार, प्रत्येक मिनट लगभग 44 भारतीय अत्यंत गरीबी से बाहर निकल रहे हैं।
- सतत विकास लक्ष्य 1 (SDG Goal 1): गरीबी की समाप्ति।
  - लक्ष्य 1.1: वर्ष 2030 तक वैश्विक स्तर पर अत्यंत गरीबी का पूर्ण उन्मूलन करना।
  - लक्ष्य 1.2: वर्ष 2030 तक गरीबी में जीवन यापन करने वाले पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के अनुपात को आधा (50%) करना।
- **निर्धनता, समृद्धि और ग्रह रिपोर्ट 2024 (पावर्टी, प्रॉस्पेरिटी एंड प्लैनेट रिपोर्ट 2024)** -
  - विश्व बैंक द्वारा जारी।
  - थीम: “पाथवेज आउट ऑफ़ दि पॉलीक्राइसिस (Pathways Out of the Polycrisis)”।
- **निर्धनता और समानता संक्षिप्त रिपोर्ट (पावर्टी एंड इक्विटी ब्रीफ रिपोर्ट)**
  - विश्व बैंक द्वारा जारी, जिसके अनुसार भारत में 10 वर्षों में 171 मिलियन (17.1 करोड़) लोग अत्यंत गरीबी से बाहर निकले हैं।
- **चर्निंग पुअर (Churning Poor):** वह वर्ग या समूह जो नियमित रूप से गरीबी रेखा के अंदर और बाहर (आता-जाता) रहता है।

नोट - राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) सामाजिक-आर्थिक एवं उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण आयोजित करता है। इन सर्वेक्षणों के आँकड़ों के आधार पर **नीति आयोग (NITI Aayog) भारत की आधिकारिक गरीबी रेखा का आकलन एवं निर्धारण करता है।**

14 शिक्षा और स्वास्थ्य

शिक्षा

- शिक्षा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21A के अंतर्गत एक मौलिक अधिकार है तथा सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और लोकतांत्रिक नागरिकता की स्थापना का एक सशक्त माध्यम है।
- शिक्षा को **42वें संविधान संशोधन अधिनियम**, 1976 द्वारा समवर्ती सूची (Concurrent List) में रखा गया, जिससे इस विषय पर कानून बनाने का अधिकार केंद्र और राज्य-दोनों को प्राप्त है।

मुख्य तथ्य

- **सतत विकास लक्ष्य 4 (SDG 4)** - सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना
- जीडीपी के प्रतिशत के रूप में शिक्षा पर व्यय - 2.7% (केंद्र + राज्य)
  - नई शिक्षा नीति (NEP) का लक्ष्य - जीडीपी का 6%
  - टी. एस. आर. सुब्रमण्यम समिति ने भी जीडीपी के 6% की सिफारिश की थी।
- भारत की लगभग 27% जनसंख्या 3 से 18 वर्ष के विद्यालय-आयु वर्ग (School-going Age Group) में आती है।
- भारत में 3-18 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए अपेक्षित स्कूली शिक्षा अवधि (Expected Years of Schooling) 13 वर्ष है।
  - एनईपी 2020 (NEP 2020) के 5+3+3+4 के ढांचे के अनुसार, यह 15 वर्ष होना चाहिए।
  - 14-18 वर्ष आयु वर्ग के लगभग 2 करोड़ बच्चे विद्यालय से बाहर हैं, जिनमें से अधिकांश परिवार की आजीविका में योगदान देने के लिए काम करते हैं।
  - पहला पूर्ण डिजिटल साक्षर राज्य → केरल
- **शारदा प्रसाद समिति** - व्यावसायिक शिक्षा (कौशल विकास) पर ध्यान केंद्रित करना।

परिभाषाएं

- **साक्षरता दर** - 7 वर्ष या उससे अधिक आयु की उस जनसंख्या का प्रतिशत, जो किसी भी भाषा में समझ के साथ पढ़ और लिख सकते है।
- **सकल नामांकन अनुपात (GER)** - किसी विशेष शैक्षणिक स्तर पर नामांकित छात्रों की संख्या है (चाहे उनकी आयु कुछ भी हो), जिसे संबंधित आयु वर्ग की जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है।
  - उच्च शिक्षा (Higher Education) का सकल नामांकन अनुपात (GER), 18-23 वर्ष आयु वर्ग की कुल जनसंख्या की तुलना में उच्च शिक्षा में नामांकित विद्यार्थियों का प्रतिशत दर्शाता है।
  - उच्च शिक्षा में → GER महिला > GER पुरुष
- **अधिगम ग़रीबी (Learning Poverty) :** 'लर्निंग पावर्टी' या अधिगम ग़रीबी का अर्थ 10 वर्ष की आयु तक एक सरल पाठ को पढ़ने और समझने में असमर्थ होना है (विश्व बैंक)।
  - विश्व बैंक के अनुसार, भारत में 55% बच्चे अधिगम ग़रीबी (लर्निंग पावर्टी) से पीड़ित हैं।
  - प्रथम NGO द्वारा प्रकाशित वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (ASER), 2022 के अनुसार, COVID-19 महामारी के बाद भारत में अधिगम ग़रीबी (Learning Poverty) बढ़कर लगभग 70% हो गई।

15 कमज़ोर वर्गों के लिए योजनाएँ

महिला

मुख्य तथ्य

- **SDG Goal 5 - लैंगिक समानता प्राप्त करना और सभी महिलाओं व लड़कियों को सशक्त बनाना।**
- **जन्म के समय लिंगानुपात में सुधार हुआ:** 2014-15 में 918 (प्रति 1000 लड़कों पर लड़कियाँ) से बढ़कर 2024-25 में 929 हो गया।

महिलाओं के लिए योजनाएं

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (2015)

- 22 जनवरी 2015 को शुरू की गई।
- इसका उद्देश्य **घटते बाल लिंगानुपात** की समस्या का समाधान करना, लिंग-आधारित भ्रूण परीक्षण को रोकना और बालिका के जीवन अस्तित्व, सुरक्षा व शिक्षा को बढ़ावा देना है।
- यह 100% केंद्र सरकार द्वारा वित्तपोषित योजना है, जिसका क्रियान्वयन मिशन शक्ति (Mission Shakti) के 'संबल' घटक के तहत देश के सभी जिलों में किया जाता है।
- इसके अंतर्गत शामिल हैं:
  - PCPNDT अधिनियम का सख्ती से पालन कर कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लगाना।
  - डिजिटल गुड्डी-गुड्डा बोर्ड के माध्यम से प्रत्येक जिले का लड़का-लड़की जन्म अनुपात प्रदर्शित करना।
  - टीवी, रेडियो, सोशल मीडिया आदि के माध्यम से जन-जागरूकता अभियान चलाना।

सुकन्या समृद्धि योजना

- विभाग: आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय।
- वर्ष 2015 में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत शुरू की गई।
- 10 वर्ष तक की आयु की बालिका के नाम पर डाकघरों एवं अधिकृत बैंकों में खाता खोला जा सकता है।
- एक परिवार की अधिकतम दो बालिकाओं के लिए खाता खोला जा सकता है।
- खाता खोलने की तिथि से 21 वर्ष पूर्ण होने पर अथवा बालिका के विवाह पर (जो पहले हो) खाता परिपक्व हो जाता है।
- 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर उच्च शिक्षा के लिए खाते में जमा राशि का अधिकतम 50% निकाला जा सकता है।
- न्यूनतम जमा - ₹250 प्रति वर्ष
- अधिकतम जमा - ₹1.5 लाख प्रति वर्ष
- हाल ही में सुकन्या समृद्धि योजना के लिए ब्याज दर 8% से बढ़ाकर 8.2% कर दी गई है।

16 मानव विकास सूचकांक (HDI), हैप्पीनेस इंडेक्स और अन्य सूचकांक

- लंबे समय तक किसी देश की प्रगति का आकलन मुख्यतः सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एवं आर्थिक वृद्धि (Economic Growth) के आधार पर किया जाता था। किन्तु केवल आर्थिक समृद्धि ही बेहतर जीवन स्तर की गारंटी नहीं देती। स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता, स्वतंत्रता एवं समग्र कल्याण जैसे पहलू भी विकास के महत्वपूर्ण आधार हैं। इन्हीं सीमाओं को ध्यान में रखते हुए मानव विकास की अवधारणा विकसित हुई, जिसने आय के बजाय मानव एवं उसकी क्षमताओं को विकास का केंद्र बनाया।
- **मानव विकास के 4 स्तंभ -** समता (Equity), सततता (Sustainability), उत्पादकता (Productivity) और सशक्तिकरण (Empowerment)

मानव विकास सूचकांक (HDI)

- मानव विकास सूचकांक की अवधारणा का प्रतिपादन मुख्यत: पाकिस्तानी अर्थशास्त्री डॉ. महबूब-उल-हक ने किया। पहली रिपोर्ट **1990 में** महबूब उल हक और भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता **अमर्त्य सेन** द्वारा जारी की गई थी।
- यह रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा **प्रतिवर्ष** प्रकाशित की जाती है।
- एचडीआई **3 मापदंडों** का ज्यामितीय माध्य (Geometric mean) है -
  - **स्वास्थ्य** → जन्म के समय जीवन प्रत्याशा द्वारा मापा जाता है
  - **शिक्षा** → स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष और स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष द्वारा मापी जाती है
  - **जीवन स्तर (Standard of living)** → प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI) द्वारा मापा जाता है

मानव विकास रिपोर्ट 2025 -

- **थीम** - A matter of choice: People and possibilities in the age of AI
- भारत में स्व-रिपोर्टेड कृत्रिम बुद्धिमत्ता कौशल की पैठ (AI Skills Penetration) विश्व में सर्वाधिक है।
- भारत को 193 देशों में से 130वां स्थान दिया गया है
  - **स्कोर** - 0.685
  - जन्म के समय जीवन प्रत्याशा = 72 वर्ष
  - प्रति व्यक्ति आय = $ 9,046
  - **श्रेणी** - मध्यम मानव विकास
    - 4 श्रेणियां हैं = अति उच्च (Very High), उच्च (High), मध्यम (Medium) और निम्न (Low) मानव विकास
- चीन (78वां), श्रीलंका (89वां), और भूटान (125वां) भारत से ऊपर हैं
- बांग्लादेश (130वां) भारत के बराबर है
- नेपाल (145वां), म्यांमार (150वां), और पाकिस्तान (168वां) भारत से नीचे हैं
- शीर्ष 3 -
  - आइसलैंड (0.972)
  - नॉर्वे (0.970)
  - स्विट्जरलैंड (0.970)
- सबसे नीचे → दक्षिण सूडान (0.388)

17 पर्यावरण क्षरण और सतत विकास

- जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के औसत तापमान और मौसम के दीर्घकालिक पैटर्न में महत्वपूर्ण में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तन से है। 1800 के दशक के बाद से इसका प्रमुख कारण मानवीय गतिविधियाँ, विशेषकर ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन, रही हैं।
- **भारत की जलवायु कार्रवाई रणनीति के 3 स्तंभ -**
  - **अनुकूलन (Adaptation)** - चरम मौसम की घटनाओं, बढ़ते समुद्र के स्तर, जल और खाद्य सुरक्षा जैसी चुनौतियों के प्रति क्षमता एवं लचीलापन विकसित करना।
  - **शमन** (Mitigation) - अक्षय ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन और परमाणु ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देकर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी लाना।
  - **घरेलू संसाधनों पर निर्भरता -** जलवायु वित्त के लिए सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड , येलो बॉन्ड एवं अन्य घरेलू वित्तीय साधनों का उपयोग

अनुकूलन (Adaptation)

- जलवायु परिवर्तन अनुकूलन **जलवायु परिवर्तन के वर्तमान और अनुमानित प्रभावों के अनुसार खुद को ढालने** की प्रक्रिया है। अनुकूलन बाढ़, सूखा, समुद्र के बढ़ते स्तर के कारण होने वाले विस्थापन जैसी घटनाओं के प्रति संवेदनशीलता को कम करने में मदद करता है।
- अधिकांश पूंजी का उपयोग शमन (mitigation) में किया जाता है, इसलिए अनुकूलन संसाधनों की कमी से जूझ रहा है।
  - यूएनईपी (UNEP) की 2025 **अनुकूलन अंतर रिपोर्ट (Adaptation Gap Report)** का अनुमान है कि विकासशील देशों को 2035 तक सालाना 310 अरब अमेरिकी डॉलर से 365 अरब अमेरिकी डॉलर के बीच की आवश्यकता होगी।
- वित्त वर्ष 2022 में भारत का अनुकूलन खर्च सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 5.6% था।
  - **आवश्यकता** - भारत जलवायु परिवर्तन के प्रति 7वां सबसे संवेदनशील देश है। समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, चरम मौसम परिवर्तन, जैव विविधता का नुकसान, जल असुरक्षा आदि समस्याएं।

भारत में जलवायु अनुकूलन के प्रयास -

- **जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC)** - सतत आवासों, जल प्रबंधन, सतत कृषि आदि पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - **राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA) - "प्रति बूंद अधिक फसल"** (Per Drop More Crop), एकीकृत खेती के लिए वर्षा सिंचित क्षेत्र विकास, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन जैसी पहलों के माध्यम से जलवायु-अनुकूल खेती को बढ़ावा देता है।
- राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन एवं मानव स्वास्थ्य कार्यक्रम (NPCCHH)
- **राष्ट्रीय तटीय मिशन** - तटीय समुदायों की संवेदनशीलता को कम करने के लिए एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन और जलवायु-अनुकूल तटीय अवसंरचना का विकास
- **तटीय आवास और मूर्त आय के लिए मैंग्रोव पहल (MISHTI) -**
  - पांच साल की अवधि (2023-2028) में नौ तटीय राज्यों और चार केंद्र शासित प्रदेशों में 540 वर्ग किलोमीटर मैंग्रोव को पुनर्स्थापित और पुनर्वनीकरण करना।
  - मिष्टी (MISHTI) से लगभग 22.8 मिलियन मानव-दिवस रोजगार सृजन होने की उम्मीद है।
  - इससे अनुमानित 4.5 मिलियन टन का कार्बन सिंक (carbon sink) निर्मित होगा।
- **राष्ट्रीय जलीय पारितंत्र संरक्षण योजना** - बाढ़ नियंत्रण और जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए।

E अर्थव्यवस्था से संबंधित व्यापक निबंध विषय

UPSC, RAS तथा अन्य राज्य लोक सेवा आयोगों की मुख्य परीक्षा में अर्थव्यवस्था से संबंधित उत्तर लिखते समय निम्न विषयों (Themes), प्रमुख शब्दों (Keywords) एवं अवधारणाओं (Concepts) का यथासंभव समावेश करें। इनका प्रभावी प्रयोग आपके उत्तर को सामान्य अध्ययन (GS) के उत्तरों से अलग पहचान देता है, उसमें आर्थिक दृष्टिकोण (Economic Perspective), विश्लेषणात्मक गहराई एवं परिपक्वता जोड़ता है तथा परीक्षक के समक्ष आपकी विषयगत समझ को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। परिणामस्वरूप, आपके उत्तर अधिक प्रासंगिक, संतुलित एवं उच्च अंक प्राप्त करने योग्य बनते हैं।

थीम	उप-विषय / मुख्य शब्द
मैक्रोइकॉनॉमिक स्थिरता	मुद्रास्फीति (CPI/WPI), राजकोषीय घाटा, सार्वजनिक ऋण, मौद्रिक नीति (रेपो रेट), वित्तीय स्थिरता, ऋण-GDP अनुपात
आर्थिक वृद्धि एवं विकास	GDP विकास दर, घरेलू मांग, प्रति व्यक्ति आय, समावेशी विकास, सतत विकास, सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल मूल्य वर्धन (GVA), मानव विकास सूचकांक (HDI)
निवेश और पूंजी निर्माण	सार्वजनिक निवेश, निजी निवेश, सकल स्थिर पूंजी निर्माण (GFCF), FDI, अवसंरचना निवेश, सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल, राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP)
रोजगार और श्रम बाजार	बेरोज़गारी दर, श्रम बल भागीदारी दर (LFPR), महिला LFPR, अनौपचारिक रोज़गार, श्रम उत्पादकता, श्रम संहिताएँ, गिग अर्थव्यवस्था, स्किल इंडिया, नए श्रम कानून
कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था	कृषि उत्पादकता, सिंचाई, फसल विविधीकरण, कृषि निर्यात, कृषि विपणन, खाद्य प्रसंस्करण, किसानों की आय दोगुनी करना, MSP, संबद्ध क्षेत्र
औद्योगिक विकास और विनिर्माण	विनिर्माण, मेक इन इंडिया, MSME, PLI स्कीम, सेमीकंडक्टर विनिर्माण, डिफेंस विनिर्माण, औद्योगिक गलियारे
सेवा अर्थव्यवस्था और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था	IT सेवाएँ, डिजिटल अर्थव्यवस्था, पर्यटन, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, वित्तीय सेवाएँ, स्टार्ट-अप, इनोवेशन, AI
बाह्य क्षेत्र	निर्यात, निर्यात विविधीकरण, आयात, चालू खाता घाटा (CAD), भुगतान संतुलन (BoP), विदेशी मुद्रा भंडार, विनिमय दर
वैश्विक एकीकरण	वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएँ (GVCs), GVCs में एकीकरण, मुक्त व्यापार समझौते (FTAs), WTO, सप्लाई चेन रेज़िलिएंस, चीन+1 रणनीति
वित्तीय क्षेत्र	बैंकिंग NPA, ऋण वृद्धि, बॉन्ड मार्केट, कॉर्पोरेट बॉन्ड मार्केट, इंश्योरेंस, पूंजी मार्केट, वित्तीय समावेशन, दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता (I&BC),